

कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान

मधु पटियाल¹, अंजना ठाकुर² एवं संतोष कुमार बिशनोई³

¹भा.कृ.अनु.प-भा.कृ.अ.सं, क्षेत्रीय केंद्र शिमला

²सी एस के एच पी के वी, पालमपुर

³ भा.कृ.अनु.प-आई आई डब्लू बी आर, करनाल

लेखक का मेल: mcaquarian@gmail.com

महिलाओं ने कृषि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कम शारीरिक श्रम और अधिक परिश्रम की आवश्यकता वाले कार्यों, जैसे कि निराई, को महिलाओं के लिए छोड़ दिया जाता है, और गृहिणी के रूप में उनकी प्रमुख भूमिका के अलावा महिलाएं इन गतिविधियों को अच्छी तरह करती हैं। महिलाएं, पुरुषों की तुलना में लंबे समय तक काम करती हैं। इसलिए, कृषि प्रथाओं के आधुनिकीकरण के चक्र में महिलाओं की भागीदारी आर्थिक रूप से व्यवहार्य और पर्यावरण की दृष्टि से स्थायी कृषि के लिए बहुत जरूरी है। महिलाएं पारिवारिक आय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अर्जित करती हैं। वे खाद्य प्रसंस्करण, पशुधन और सब्जी उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत में, कृषि आधुनिकीकरण से छोटे किसानों के घरों में महिलाओं पर मिश्रित प्रभाव पड़ा है। ग्रामीण भारत में महिलाएं विभिन्न अनुष्ठानों द्वारा, खेत पर जैव विविधता का संरक्षण करती हैं।

आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18 में कहा गया है कि उत्पादकों, उद्यमियों और मजदूरों

के रूप में कई भूमिकाओं में महिलाओं की बढ़ती संख्या तथा पुरुषों द्वारा ग्रामीण से शहरी प्रवास के कारण कृषि क्षेत्र का 'नारीकरण' हुआ है। ग्रामीण महिलाएं परिवार की दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों के एकीकृत प्रबंधन और शोषण के लिए जिम्मेदार हैं। इसके अलावा, कृषि में उत्पादकता बढ़ाने के लिए महिला किसानों की भागीदारी महत्वपूर्ण है। इंटरनेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट (IRRI) द्वारा संचालित महिलाओं द्वारा राइस फार्मिंग सिस्टम नेटवर्क में संचालित गतिविधियों ने एशियाई उत्पादन प्रणालियों में महिलाओं के योगदान को एक वैज्ञानिक ज्ञान आधार बनाने में मदद की है। इंटरनेशनल सेंटर फॉर लिविंग एक्वाटिक रिसोर्स मैनेजमेंट (ICLARM) को एक्वाकल्चर और फिशरी में महिलाओं की भूमिका और योगदान महत्वपूर्ण है।

महिलाएं विकासशील देशों के सभी क्षेत्रों में कृषि और ग्रामीण आर्थिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। उनकी भूमिकाएं क्षेत्रों के भीतर और बाहर



भिन्न होती हैं और दुनिया के ऐसे कई हिस्सों में तेज़ी से विकसित हो रही हैं, जहाँ आर्थिक और सामाजिक शक्तियों द्वारा कृषि क्षेत्र को बदल दिया गया है। महिलाएँ कृषि में किसानों के रूप में काम करती हैं, परिवार के खेतों में अवैतनिक श्रमिक के रूप में, और अन्य खेतों तथा कृषि उद्यम में भुगतान या अवैतनिक मजदूरों के रूप में। जीवन निर्वाह, फसलों का व्यावसायिक उत्पादन और पशुधन, इन सब में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वे खाद्य और नकदी फसलें (cash crops) उगाती हैं और मिश्रित कृषि कार्यों का प्रबंधन करती हैं जिसमें फसल, पशुधन और मछली पालन भी शामिल हैं। इन सभी महिलाओं को कृषि श्रम शक्ति का हिस्सा माना जाता है।

भारत में कृषि श्रम बल में महिलाओं का अनुपात 30 फीसदी से अधिक है। कृषि में महिलाओं की भागीदारी गतिशील और विविध है। महिलाएं अपने पुरुष समकक्षों के साथ घर के साथ-साथ कई तरह के औद्योगिक और पशुधन संचालन में भी भाग लेती हैं। कृषि की बदलती रूपरेखा और गैर-कृषि क्षेत्र के विकास के साथ कृषि में महिलाओं की भागीदारी का दायरा बदल रहा है। भारत में कृषि पारिवारिक व्यवहार, सामाजिक संबंधों और लैंगिक भूमिकाओं का वर्णन करती है। कृषि क्षेत्र की महिला, चाहे पारंपरिक साधनों से या औद्योगिक माध्यमों से, निर्वाह के लिए या कृषि कार्यकर्ता के रूप

में, एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय समुदाय है। कृषि का सीधा संबंध आर्थिक स्वतंत्रता, निर्णय लेने, संगठन और शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं, जैसे मुद्दों से है।

ग्रामीण भारत में अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर रहने वाली महिलाओं का आंकड़ा 84 प्रतिशत है। महिलाएँ लगभग 33 प्रतिशत किसान और लगभग 47 प्रतिशत कृषि श्रमिक हैं। ये आंकड़े पशुधन क्षेत्र, मत्स्य क्षेत्र और देश में खाद्य उत्पादन के कई अन्य सहायक रूपों में हैं। चाय बागानों के कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी 47%, कपास की खेती में 46.84%, तेल के बीज में 45.43% और सब्जी उत्पादन में 39.13% है। महिलाओं को भी भारी कृषि गतिविधियों में शामिल किया गया है। कृषि में महिलाओं की भागीदारी की प्रकृति और सीमा क्षेत्र से क्षेत्र काफी भिन्न होती है। हालांकि, इन विविधताओं के बावजूद, महिलाएं विभिन्न कृषि गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हैं।

ग्रामीण महिलाएँ कई श्रम-गहन कार्य करती हैं, जैसे कि निराई, गुड़ाई, घास काटना, कपास की लकड़ियों को इकट्ठा करना, फाइबर से बीज अलग करना, पशुओं को रखना और अन्य संबंधित गतिविधियाँ जैसे दूध बेचना, घी तैयार करना, आदि। ग्रामीण महिलाएं मुख्य रूप से कृषि गतिविधियों में तीन अलग-अलग तरीकों से लगी हुई हैं, जो उनके परिवार की सामाजिक-

आर्थिक स्थिति और क्षेत्रीय कारकों पर निर्भर करती है।

- पेड मजदूर (Paid labour)।
- अपनी जमीन पर खेती करने वाले किसान।
- कटाई के बाद के कार्यों में श्रम पर्यवेक्षण और भागीदारी के माध्यम से कुछ कृषि उत्पादन पहलुओं के प्रबंधक।

महिलाओं खेती में निम्न कार्य करती हैं:

- नर्सरी प्रबंधन
- रोपाई
- निराई
- सिंचाई
- उर्वरक आवेदन
- पौध - संरक्षण
- कटाई, छंटाई, भंडारण आदि।

पशु पालन: पशुधन निर्वाह का एक मुख्य साधन है जिसका उपयोग घरेलू भोजन की जरूरतों को पूरा करने और खेत की आय बढ़ाने के लिए किया जाता है। अध्ययनों से पता चला है कि ग्रामीण महिलाएं दूध और पशुधन की बिक्री से अधिक आय प्राप्त करती हैं। बहुत सी पशुधन प्रबंधन प्रथाओं में महिलाओं की भूमिका देखने को मिलती है जैसे कि:

- पशु और शेड की सफाई,
- पशुओं को पानी पिलाना
- चारा संग्रह
- गोबर केक तैयार करना

- खेत यार्ड खाद एकत्र करना

कुक्कुट पालन: चाहे वह कुपोषण, गरीबी और लैंगिक असमानता हो, ग्रामीण भारत तेजी से एक ऐसा स्थान बनता जा रहा है जहां लोग घर में मुर्गीपालन की संभावनाएं तलाश रहे हैं। कुक्कुट पालन प्रमुख ग्रामीण आर्थिक स्रोतों में से एक है। कुक्कुट उद्योग में घरेलू स्तर पर कुक्कुट पालन में महिला की भागीदारी महत्वपूर्ण है। अंडे के लिए भारत सरकार की राष्ट्रीय कार्य योजना के अनुसार बैकयार्ड पोल्ट्री भारत के पोल्ट्री क्षेत्र का 20 प्रतिशत हिस्सा है, जिसकी कीमत ₹800 बिलियन से अधिक है। भारत की 19वीं पशुधन गणना का अनुमान है कि देश भर में, लगभग 30 मिलियन किसान बैकयार्ड पोल्ट्री पालन में लगे हुए हैं। ग्रामीण भारत में बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग को लोकप्रिय बनाने के प्राथमिक उद्देश्यों में से एक गरीब किसानों और दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले स्वदेशी समुदायों के लोगों को आय के बेहतर अवसर प्रदान करना है। इसके लाभ यह है कि यह ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने में मदद कर सकता है और खाद्य असुरक्षा और कुपोषण के मुद्दों को दूर कर सकता है।

हालांकि दुनिया की लगभग आधी कृषि श्रम शक्ति महिलाओं की है, पर महिलाओं के पास 20 प्रतिशत से कम कृषि भूमि है। वहीं, अध्ययन में आया है कि दुनिया में लंबे समय से भूखे लोगों में से 60



प्रतिशत महिलाएं या लड़कियां हैं। इसलिए महिलाओं का सशक्तिकरण करना बेहद आवश्यक है क्योंकि जब महिलाएं पूरी तरह से कृषि में शामिल होती हैं तो लाभ तुरंत देखा जा सकता है जैसे कि: स्वस्थ परिवार; अधिक आय, बचत और अधिक निवेश। महिला किसानों की क्षमता का एहसास करने के लिए कृषि में लिंग विशिष्ट और लिंग संवेदनशील दृष्टिकोण, संरचनात्मक असमानताओं को संबोधित करना आवश्यक

है। सक्षम और कुशल महिला कार्यबल से किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। समान पहुंच और अवसर सुनिश्चित करके कृषि में महिला कार्यबल का सशक्तिकरण भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन लाएगा, जिससे लाखों लोगों के जीवन में सुधार होगा।